सामाजिक कार्यकर्ता एक नेता की बजाए एक साहूकार की भूमिका निभाता है और समाज कार्य के मूल्यों, नैतिकताओं तथा सिद्धान्तों में दृढ़ धारणा दर्शाता है। इससे विपरीत, सामाजिक आंदोलन अक्सर स्थानीय नेताओं द्वारा चलाया जाता है जो लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अपने आंदोलन को हिंसक और गैर–कानूनी गतिविधियों के मार्ग पर ले जा सकते हैं, और नहीं भी। विचारधारा की लड़ाई में निजी अहम् छद्म रूप में टकराते हैं जिससे सामाजिक आंदोलन को क्षति पहुंच सकती है जैसा कि हमने चिपको आंदोलन के मामले में इसके दो नेताओं सुंदरलाल बहुगुणा और चंडी प्रसाद भट्ट के बीच देखने को मिला। सामाजिक कार्यकर्ता के पास जनता को संचालित करने और धारणीयता बनाए रखने को विशेषज्ञता होती है जो सामाजिक आंदोलन के नेताओं (जो प्रायः समाज कार्य व्यवसाय से इतर होते हैं) के पास नहीं होती।

अन्य संबंधित शब्दों के साथ सामाजिक क्रिया शब्द के संबंध पर प्रकाश डाला जा सकता है। सामाजिक क्रिया और समाज सुधार आपस में संबंधित हैं। गोरे (1987) के अनुसार– ''सामाजिक सुधार, सामाजिक व्यवहारों, सांस्कृतिक रूप से परिभाषित उम्मीदपूर्ण भूमिकाओं और लोगों के वास्तविक व्यवहार के नमूनों में, सार्वजनिक शिक्षा और अनुनय प्रक्रिया के माध्यम से परिवर्तन लाने का एक सोचा हुआ प्रयास है।'' वास्तव में, सामाजिक सुधार प्राप्त करने के साधन के रूप में सामाजिक कार्य को लिया जा सकता है। दोनों, सामाजिक क्रिया और सामाजिक सुधार, सामाजिक न्याय और समानता के सिद्धांतों का उपयोग कर मानवाधिकारों के उल्लंघन के खिलाफ आवाज उठाते हैं और वंचित लोगों की सेवा के लिए आम रणनीतियों और युक्तियों का उपयोग करते हैं। दूसरी बारीकी से संबंधित अवधारणा सामाजिक विकास की है – आर्थिक विकास से अलग, यह सामाजिक न्याय के साथ विकास की एकीकृत और समग्र धारणा है। यह अपने समतावादी समाज के लक्ष्य को सामाजिक क्रिया के साथ साझा करता है। 'शताब्दी विकास लक्ष्य' और अब 'सतत विकास लक्ष्य' इस बात पर जोर डालते हैं कि विकास को समग्र और असमानता एवं मानवाधिकारों के उल्लंघन पर आवाज उठाने वाला होना चाहिए ना कि हाशिए पर रहने वाले बहिष्कृत समुदायों की कीमत पर आंख मूंद कर आर्थिक प्रगति करनेवाला।

बोध प्रश्न 3

नोटः अपने उत्तर दिए गये रिक्त स्थान में दें।

1) सामाजिक क्रिया और सामाजिक आंदोलन के बीच तीन समानताओं और तीन भिन्नताओं को सूचीबद्ध कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

5.7 सारांश

इस इकाई में, हमें समाज कार्य के एक तरीके के रूप में सामाजिक क्रिया का बेहतर बोध प्राप्त हुआ। इसका उद्देश्य समुदाय, विशेषतय समाज के वंचित वर्गों के लिए सामाजिक न्याय और अधिकारिता प्राप्त करना होता है। यह सामाजिक न्याय, समानता और निष्पक्ष क्रिया के सिद्धान्त पर टिकी होती है और इसका लक्ष्य समाज के वंचित वर्गों के हितों की रक्षा करना होता है।

इस इकाई में, सामाजिक क्रिया के सिद्धान्तों (विश्वसनीयता निर्माण का सिद्धान्त, वैधीकरण का सिद्धान्त, नाटकीयता का सिद्धान्त, विविध रणनीतियों का सिद्धान्त, दोहरे दृष्टिकोण का सिद्धान्त तथा विविध कार्यक्रमों का सिद्धान्त) की उपयुक्त उदाहरणों– जिनमें सिद्धान्तों की प्रासंगिकता तथा विशेषताओं को इंगित किया गया है– सहित विस्तृत व्याख्या की गई है।

समाज कार्य का एक तरीका होने के कारण सामाजिक क्रिया की सामाजिक कार्य के अन्य तरीकों के साथ समानताएं हैं, साथ ही इसमें क्रिया की प्रक्रिया की विभिन्न अवस्थाओं में इन तरीकों का प्रयोग किया जाता है।

सामाजिक वैयक्तिक कार्य तथा समूह कार्य को सामाजिक क्रिया का आधार माना जा सकता है जहाँ प्राधिकारियों से टकराव के लिए लोगों को संचालित किया जाता है। सामाजिक क्रिया को सामुदायिक संगठन का अगला कदम माना जाता है। समाज कार्य शोध, सामाजिक समस्या के आलोचनात्मक परिदृश्य तथा उद्देश्यों को पूरा करने में सहायक होता है। समाज कल्याण प्रशासन से सामाजिक क्रिया के लिए समुदाय को तैयार करने हेतु जमीन तैयार होती है। सामाजिक कार्यकर्ता सामाजिक क्रिया की प्रक्रिया में समाज कार्य के अन्य तरीकों के कौशलों का उपयोग करते हैं।

सामाजिक क्रिया की सामाजिक आंदोलन के साथ भी असाधारण समानताएं हैं। इस इकाई में इन दोनों प्रक्रियाओं के बीच भिन्नताओं के क्षेत्रों की व्याख्या भी की गई है। यह इकाई समाज कार्य के अभ्यास के तरीके के रूप में सामाजिक क्रिया की एक व्यापक तस्वीर प्रस्तुत करती है।

5.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1) चौधरी, डी. पॉल, (1992): इंट्रोडक्सन टू सोशल वर्क, आत्मा राम एंड संस, दिल्ली।

2) डैविस, मार्टिन, (2000): द ब्लैकवेल इनसाइक्लोपिडिया ऑफ सोशल वर्क, (एडीशन) ब्लैकवेल पब्लिसर्स, मेसाचुएटस, पेज न. 317–318.

3) लीज, आर. (1972): पॉलिटिक्स एंड सोशल वर्क, रॉउटलेज एंड कीगन पॉल, लंदन।

6) मूर्थी, एम. वी., (1966): सोशल एक्शन, एशिया पब्लिशिंग हाउस, बॉम्बे।

7) सिद्दिकी, एच. वाई., (1984): सोशल वर्क एंड सोशल एक्शन (एडीशन) हरनाम पब्लिकेशन्स।

8) सिंह, सुरेन्द्र (1986): सोशल एक्शन इन हॉरीजोन्स ऑफ सोशल वर्क (एडीशन) बाइ सुरेन्द्र सिंह एंड के. एस. सूदन, ऑप. सिट. पेज 161

3) सैमुएल, जे. (2000): सोशल एक्शनः एन इन्डियन पैनोरमा,(एडीशन), पुणेः वोलेन्टरी एक्शन नेटवर्क इंडिया।